❍ 29 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗बहुत बहुत शांतचित रहे ?∗

➢➢ ∗"हम बाबा को देते हैं" - यह संकल्प तो नही आया ?∗

➢➢ ∗काम महाशत्रु के साथ उसके सर्व साथियों को भी विदाई दी ?∗

➢➢ ∗संगमयुग की मौज का अनुभव किया ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ कर्मातीत स्थिति को पाने के लिए विशेष स्वयं में समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति धारण करना आवश्यक है। ∗कर्मबन्धनी आत्माएं जहाँ हैं वहाँ ही कार्य कर सकती हैं और कर्मातीत आत्मायें एक ही समय पर चारों ओर अपना सेवा का पार्ट बजा सकती हैं क्योंकि कर्मातीत हैं। उनकी स्पीड बहुत तीव्र होती है, सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकती हैं, तो इस अनुभूति को बढ़ाओ।∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

────────────────────────

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं तीव्र पुरुषार्थी आत्मा हूँ"*

〰✧ स्वयं को तीव्र पुरूषार्थी आत्मायें अनुभव करते हो? *क्योंकि समय बहुत तीव्रगति से आगे बढ़ रहा है। जैसे समय आगे बढ़ रहा है, तो समय पर मंजिल पर पहुँचने वाले को किस गति से चलना पड़े? समय कम है और प्राप्ति ज्यादा करनी है। तो थोड़े समय में अगर ज्यादा प्राप्ति करनी हो तो तीव्र करना पड़ेगा ना।* समय को देख रहे हो और अपने पुरूषार्थ की गति को भी जानते हो। तो समय अगर तेज है और अपनी गति तेज नहीं है तो समय अर्थात् रचना आप रचता से भी तेज हुई।

〰✧ रचता से रचना तेज चली जाए तो उसे अच्छी बात कहेंगे? रचना से रचता आगे होना चाहिए। *सदा तीव्र पुरूषार्थी आत्मायें बन आगे बढ़ने का समय है। अगर आगे बढ़ते कोई साइडसीन को भी देख रूकते हो, तो रूकने वाले ठीक समय पर पहुँच नहीं सकेंगे। कोई भी माया की आकर्षण साइडसीन है।* साइडसीन पर रूकने वाला मंजिल पर कैसे पहुँचेगा? इसलिए सदैव तीव्र पुरूषार्थी बन आगे बढ़ते चलो।

〰✧ ऐसे नहीं समय पर पहुँच ही जायेंगे, अभी तो समय पड़ा है। ऐसे सोचकर आगर धीमी गति से चलेंगे तो समय पर धोखा मिल जायेगा। बहुत

काल का तीव्र पुरूषार्थ का संस्कार अन्त में भी तीव्र पुरूषार्थ का अनुभव करायेगा। तो सदा तीव्र पुरूषार्थी। कभी तीव्र, कभी कमजोर नहीं। ऐसे नहीं थोड़ी-सी बात हुई कमजोर बन जाओ। इसको तीव्र पुरूषार्थी नहीं कहेंगे। *तीव्र पुरूषार्थी कभी रूकते नहीं, उड़ते हैं। तो उड़ते पंछी बन उड़ती कला का अनुभव करते चलो। एक-दो को भी सहयोग दे तीव्र पुरूषार्थी बनाते चलो। जितनी औरों की सेवा करेंगे उतना स्वयं का उमंग-उत्साह बढ़ता रहेगा।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ *राजा ऑर्डर करे - यह काम नहीं होना है।* तो प्रजा क्या करेगी? *मानना पडेगा ना।* आजकल तो राजा ही नहीं है, प्रजा का प्रजा पर राज्य है। इसलिए कोई किसका मानता ही नहीं है। लेकिन आप लोग तो राजयोगी हो ना।

〰✧ आपके यहाँ प्रजा का प्रजा पर राज्य नहीं है ना राजा का राज्य है ना तो बाप कहते हैं - 'हे राजे! आपके कन्ट्रोल में आपकी प्रजा है? *या कभी कन्ट्रोल से बाहर हो जाती है?*

〰✧ रोज राज्य दरबार लगाते हो?' *रोज रात्रि को राज्य दरबार लगाओ।* अपने राज्य कारोबारी 'कर्मेन्द्रियों' से हालचाल पूछो। जैसे राजा राज्य दरबार

लगाता है ना तो आप अपनी राज्य दरबार लगाते हो? या भूल जाते हो, सो जाते हो? राज्य दरबार लगाने में कितना टाइम लगता है?

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

────────────────────────

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ *फ़रिश्ता स्वरूप अर्थात् स्मृति स्वरूप में हो, साकार रूप में हो। सिर्फ़ समझने तक नहीं, स्मृति तक नहीं, स्वरूप में हो।* ऐसा परिवर्तन, किसी समय भी, किसी हालत में भी अलौकिक स्वरूप अनुभव हो। ऐसे है या थोड़ा बदलता हैं? *जैसी बात वैसे अपना स्वरूप नहीं बनाओ। बात आपको क्यों बदले, आप बात को बदलो। बोल आपको बदले या आप बोल को बदलो।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

────────────────────────

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- हीरे जैसा जीवन बनाने वाले बाप को, बहुत ख़ुशी से याद करना"*

➳ _ ➳ मीठे बाबा के कमरे में बेठी हुई मै आत्मा,.. *मीठे बाबा के मुझ आत्मा पर किये हुए अनन्त उपकारों को याद कर रही हूँ.*.. प्यारे बाबा ने मुझ, देह की मिटटी में लथपथ आत्मा को... *अपने प्यार भरे हाथो में लेकर, देवताई कृति बना दिया है.*.. सच्ची खुशियो को मेरे जीवन में सजाकर... मुझे ख़ुशी और आनन्द का पर्याय बना दिया है... आज ईश्वरीय प्यार की बदौलत... मै आत्मा *गुणवान, शक्तिवान बनकर हीरे जैसा दमक रही हूँ... और मेरी चमक पूरे विश्व को आकर्षित कर... मीठे बाबा का दीवाना बना रही है.*..

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सच्ची खुशियो से महकाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... भगवान के दर्शन मात्र को कितने जतन करते रहे... *आज भाग्य ने भगवान को ही सम्मुख ला दिया है... जो अपनी गोद में बिठाकर पढ़ा रहा... प्यार की पालना देकर, जीवन को हीरे जैसा चमका रहा.*.. ऐसे मीठे प्यारे बाबा को असीम ख़ुशी के साथ याद कर सच्चे प्यार में डूब जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा ईश्वर को अपनी नजरो के सम्मुख पाकर, ख़ुशी से नाचते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा *अपने भाग्य की जादूगरी पर फ़िदा हूँ, जिसने ईश्वर को मेरी बाँहों में दिलवाकर, मुझे असीम खुशियो से भर दिया है.*.. मै आत्मा आपकी प्यारी बाँहों में बेफिक्र बादशाह बन गयी हूँ और हीरो सी दमक को पा रही हूँ...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझे अनन्त शक्तियो से भरकर शक्तिशाली बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वरीय प्यार हीरे जैसा सज संवर कर, सदा सच्ची खुशियो में मुस्कराओ... गुणो और शक्तियो से भरपूर होकर, अनन्त सुख भरे सतयुग में देवताई सत्ता को पाओ... *मीठे बाबा की यादो में इस कदर खो

जाओ कि... जीवन सुखो का पर्याय बन, मीठे स्वर्ग की धरोहर को दिलवाये.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा के अथाह ज्ञान धन को दिल में समाकर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... आपके बिना मेरा जीवन दुखो का जंगल बन गया था... जिसमे मै आत्मा लहुलहानं, होकर बेहाल थी... *मेरी दारुण पुकार सुन, आपने जो मेरा हाथ थामा... मेरा जीवन सुखो की बहार बनकर, मुस्कराने लगा है.*..अब मै आत्मा एक पल के लिए भी आपको भूलती नही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को देह की धूल से निकाल हीरे सा जगमगाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... सदा ईश्वरीय यादो के नशे में डूबे रहो... यह यादे ही सच्चे सुखो का आधार है... मीठे बाबा को बड़े ही प्यार से हर पल, हर साँस से याद करो... *सदा यादो के समन्दर में डूबे रहो... यह यादे ही विकर्मो से मुक्त कराकर...जीवन को सुख की बगिया बनाएंगी.*..

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को पाकर खुशियो में गुनगुनाते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे...मै आत्मा *आपको पाकर सारे जहान की खुशियो से भर गयी हूँ.*.. देह के दलदल से निकाल कर... *मुझे अपनी बाँहों में पावनता से महका रहे हो*... दिव्य गुणो से मेरा दामन सजा रहे हो..."मै आत्मा रोम रोम से आपकी यादो में डूबी हुई हूँ... मीठे बाबा से रुहरिहानं कर मै आत्मा... अपनी देह में लौट आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सबके साथ प्यार से चलना है*"

➳ ➳ प्यार के सागर अपने प्यारे पिता के प्यार के मीठे मधुर एहसास के

बारे में विचार करते ही एक सिहरन सी पूरे शरीर मे दौड़ जाती है और मन व्याकुल हो उठता है फिर से उसी प्यार को पाने के लिए। *जैसे ही मन में बाबा के निःस्वार्थ, निष्काम प्यार को पाने का संकल्प मन मे आता है मैं महसूस करती हूँ जैसे प्यार के सागर मेरे बाबा मेरे हर संकल्प को पूरा करने और अपने स्नेह की मीठी फुहारे मेरे ऊपर बरसाने के लिए मेरे पास आ रहें हैं*। हवाओ में भी जैसे एक विचित्र रूहानी खुशबू फैल गई है जो उनके आने का मुझे पैगाम दे रही है। अपनी अनन्त शक्तियों की किरणों के रूप में मेरे प्यार के सागर बाबा अपने प्यार की शीतल फुहारे मुझ पर बरसाते हुए परमधाम से उतरकर धीरे - धीरे नीचे आ रहें हैं।

➳ _ ➳ मैं महसूस कर रही हूँ जैसे कि शक्तियों का एक तेजोमय पुंज आकाश से नीचे आकर, अब सीधा मेरे सिर के ऊपर स्थित हो गया है और अपने स्नेह की अनन्त किरणे मेरे ऊपर बिखेर रहा है। *बारिश की हल्की - हल्की बूंदों की तरह अपने ऊपर पड़ती अपने स्नेह के सागर पिता के स्नेह की किरणों के वायब्रेशन्स को मैं महसूस कर रही हूँ और उनके स्नेह में डूबती जा रही हूँ*।प्यार का सागर अपना असीम प्यार मुझ पर लुटाता जा रहा है और उस प्यार के मधुर एहसास में मैं गहराई तक समाती जा रही हूँ। देह और देह की दुनिया से जुड़े सम्बन्ध जैसे कहीं पीछे छूट रहें हैं और सारे सम्बन्ध उस एक के साथ जुड़ते जा रहें हैं। *हर सम्बन्ध का अविनाशी सुख अपने प्यारे पिता के प्यार में खोकर मैं ले रही हूँ। उनके लव में लीन यह लवलीन स्थिति मुझे उनके समान स्थिति में स्थित करती जा रही है*।

➳ _ ➳ ऐसा लग रहा है जैसे देह से मेरा कोई सम्बन्ध नही। अपने स्वरूप में पूरी तरह डूब कर केवल दो सितारों की उपस्थिति को ही मैं अनुभव कर रही हूँ। एक अति सूक्ष्म चैतन्य स्टार के रुप में मैं स्वयं को देख रही हूँ और अपने सामने स्थित सुपर स्टार के रूप में अपने पिता को देख रही हूँ। *इन दोनों स्टार्स में ही जैसे सारी दुनिया समा गई है। अपने प्यार की अनन्त किरणों की वर्षा मुझ पर करते, प्यार के सागर मेरे सुपर स्टार शिव बाबा चुम्बक की तरह मुझे खींच कर अब अपने साथ ऊपर ले जा रहें हैं*। बाबा की सर्वशक्तियों की मैग्नेटिक पॉवर, नश्वर संसार की हर चीज से किनारा करवाकर मुझे खींचती हुई अब आकाश को पार कर, सूक्ष्म लोक से ऊपर मेरे स्वीट साइलेन्स होम में मुझे

ले आई है। *अपने घर मे आकर मैं आत्मा शांति की गहन स्थिति का अनुभव कर रही हूँ*।

➳ _ ➳ इस शांतिधाम घर मे चारों और फैले शांति के वायब्रेशन्स मुझे गहन शांति की अनुभूति करवाकर एक अनोखी शक्ति का संचार मेरे अन्दर कर रहें हैं। *साइलेन्स का बल अपने अंदर भरकर अब मैं सर्वगुणों और सर्वशक्तियों के सागर अपने प्यारे पिता के पास आकर बैठ गई हूँ और बड़े प्यार से उन्हें निहार रही हूँ*। मैं महसूस कर रही हूँ जैसे बाबा भी बड़े प्यार से मुझे निहार रहें हैं और अपना प्यार शीतल लहरों के रूप में धीरे - धीरे मुझ तक पहुँचा रहें हैं। बाबा के अथाह प्यार की शीतल लहरों की शीतलता मन को गहन सुख प्रदान कर रही है। धीरे - धीरे ये लहरे बढ़ रही हैं और मुझे अपने अंदर समाती जा रही हैं।

➳ _ ➳ प्यार के सागर मेरे पिता के प्यार की लहरों का प्रवाह मुझे बहा कर अपने बिल्कुल समीप ले आया है। जहाँ पहुँच कर ऐसा लग रहा है जैसे प्यार का कोई सतरंगी झरना मेरे ऊपर बरस रहा है और उस झरने के नीचे खड़ी होकर मैं स्नान करके प्यार के सागर अपने पिता के समान बनती जा रही हूँ। *नफरत, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा के पुराने स्वभाव संस्कार जैसे प्यार के सागर की गहराई में डूब गए हैं और उसके स्थान पर सबको प्रेम देने, सहयोग देने के संस्कार जैसे इमर्ज हो गए हैं*। स्वयं को मैं बाप समान प्यार का सागर अनुभव कर रही हूँ। अपने प्यारे पिता के साथ स्नेह मिलन मनाकर, उनके समान बन कर अब मैं वापिस साकारी दुनिया में लौट आती हूँ और अपने साकार तन में फिर से भृकुटि के अकालतख्त पर आकर विराजमान हो जाती हूँ।

➳ _ ➳ *प्यार के सागर अपने पिता से प्राप्त किये हुए प्यार का मधुर एहसास मेरी शक्ति बनकर अब मुझे भी बाप समान प्यार का सागर बन सबको सच्चा रूहानी प्यार देने के लिए प्रेरित करता रहता है इसलिए अपने प्यारे पिता के प्यार से स्वयं को हरपल भरपूर रखते हुए अब मैं अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को आत्मिक स्नेह देकर उन्हें तृप्त करती रहती हूँ*

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं ब्राह्मण जीवन मे काम महाशत्रु के साथ उसके सर्व साथियो को भी विदाई देने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा संगमयुग की मौज का अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा माया की अधीनता से सदा स्वतंत्र रहती हूँ ।*
✺ *मैं मायाजीत आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *पवित्रता ही महानता है। पवित्रता ही योगी जीवन का आधार है।* कभी-कभी बच्चे अनभव करते हैं कि अगर चलते-चलते मन्सा में भी अपवित्रता

अर्थात् वेस्ट वा निगेटिव, परचिंतन के संकल्प चलते हैं तो कितना भी योग पावरफुल चाहते हैं, लेकिन होता नहीं है क्योंकि जरा भी अंशमात्र संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता है तो *जहाँ अपवित्रता का अंश है वहाँ पवित्र बाप की याद जो है, जैसा है वैसे नहीं आ सकती।* जैसे दिन और रात इकट्ठा नहीं होता। इसीलिए बापदादा वर्तमान समय पवित्रता के ऊपर बार-बार अटेन्शन दिलाते हैं। *कुछ समय पहले बापदादा सिर्फ कर्म में अपवित्रता के लिए इशारा देते थे लेकिन अभी समय सम्पूर्णता के समीप आ रहा है इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता का अंश धोखा दे देगा।* तो मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें पवित्रता अति आवश्यक है। मन्सा को हल्का नहीं करना क्योंकि मन्सा बाहर से दिखाई नहीं देती है लेकिन मन्सा धोखा बहुत देती है। *ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए।*

✺ *ड्रिल :- "ब्राह्मण जीवन में पवित्रता की महानता का अनुभव करना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा पवित्र स्वरूप हूँ... जन्म-पुनर्जन्म में आते-आते अपने ही असली स्वरूप को भूल गयी थी...* सृष्टि नाटक के अन्त के भी अन्त समय बाप आकर हम आत्माओं को सूक्ष्म और स्थूल रीति से पवित्र बना रहे हैं... मैं आत्मा फरिशते रूप में एक झील किनारे आकर बैठ जाती हूँ... अपने ही प्रतिबिंब को इस झील में देख रही हूँ... कितने जन्मों से व्यर्थ संकल्पों का बोझ है... कर्मों में भी अपवित्रता... मन्सा में भी अपवित्रता, वेस्ट संकल्प, नेगेटिव संकल्पों का... परचिंतन के भी संकल्प चलते हैं... *अनुभव कर रही हूँ कि मन जो दिखता नहीं, जो सूक्ष्म है... वो कितना धोखा देती है...*

➳ _ ➳ मैं फरिश्ता मधुबन तपोभूमि आ जाती हूँ... और हिस्ट्री हॉल में सोफे पर बैठ जाती हूँ... महसूस कर रही हूँ यहां की पवित्र तरंगे... शांति की, सुख की... जन्म जन्मांतर के सारे बोझ से हल्की होती जा रही हूँ... एक दिव्य ज्योति जैसे कि विस्फोटित होती है... *रंग-बिरंगी किरणें चारों ओर फैलती हुई मुझ आत्मा में समाती जा रही है... मेरे अनादि गुणों को इमर्ज करती जा रही है...* मैं आत्मा दिव्य गुणों की स्वरूप बन गयी हूँ...

➳ _ ➳ *बाप स्मृति दिलाते हैं की पवित्रता से ही सुख, शान्ति की अनुभूति होती है...* पवित्रता मुझ आत्मा के ब्राह्मण जीवन का आधार है... मैं आत्मा सम्पूर्ण पवित्रता को अपने जीवन में अपना निरंतर बाबा की याद में रह स्मृति स्वरुप अवस्था का अनुभव कर रही हूँ... मन्सा में भी व्यर्थ संकल्प दग्ध हो रहे हैं... वाचा, कर्मणा से नेगेटिव, परचिन्तन करना समाप्त होते जा रहे है... *अटेंशन रूपी पहरा से किसी भी तरह की अंश मात्र अपवित्रता समाप्त होती जा रही है...*

➳ _ ➳ पवित्रता मुझ ब्राह्मण आत्मा का श्रृंगार है... संगमयुगी ब्राह्मण जीवन को श्रेष्ठ व महान बनाने वाला... सम्बन्ध-संपर्क में आने वाली हर ब्राह्मण आत्मा के प्रति भी पवित्र संकल्प होते जा रहे हैं... समय की संपूर्णता जैसे-जैसे समीप आती जा रही है... मैं आत्मा सम्पूर्ण पवित्र होती जा रही हूँ... सम्पूर्ण पवित्रता ही मन की संतुष्टि दे रही है... पवित्रता की शक्ति से मन निश्छल, निर्मल हो गया है... *मैं आत्मा अपने ब्राह्मण जीवन में पवित्रता की महानता का अनुभव कर रही हूँ... ओम् शान्ति...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔